बालोद जिले के डौंडी विकासखण्ड में परिचालित जोत के आकार का विश्लेषण (2015-16 से 2021-22): एक भौगोलिक अध्ययन

Mrs. Shristi Verma[1], Dr. Ranjana Sharma[2], Dr. S. D. Deshmukh[3]
[1]Research Scholar and Assistant Professor, Rani Rashmi Devi Singh Govt. College Khairagarh.
[2]Professor, Mohan Lal Jain Govt. College Khursipar, Bhilai.
[3]Professor, Govt. V. Y. T. PG Auto. College Durg.

सारांश

भूमि किसी भी कृषि प्रधान क्षेत्र की अर्थव्यवस्था की आधारभूत इकाई होती है और परिचालित जोत का आकार, संख्या तथा प्रकृति क्षेत्र की कृषि उत्पादकता, किसानों की आर्थिक स्थिति एवं ग्रामीण सामाजिक संरचना को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। प्रस्तुत शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले के एकमात्र आदिवासी विकासखण्ड डौंडी में परिचालित जोत की संख्या, आकार तथा वर्गीकरण का कृषि गणना 2015-16 एवं 2021-22 के आँकड़ों के आधार पर कालिक एवं तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन में प्रति जोत कार्यरत व्यक्तियों की संख्या, जोत के औसत आकार— सीमांत, लघु, अर्ध्दमध्यम, मध्यम एवं वृहद जोत के वर्गीकरण तथा सामाजिक वर्गानुसार— अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, अन्य एवं संस्थागत(वह भूमि अथवा जोत जो निजी न हो कर किसी संस्था के नियंत्रण में होता है।)जोत के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है। परिणामों से स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि में जोत की कुल संख्या में वृद्धि हुई है जबकि प्रति जोत औसत आकार में कमी आयी है, जो भूमि के निरंतर विखण्डन (Land Fragmentation) की प्रक्रिया को दर्शाता है। सीमांत एवं लघु जोत की संख्या एवं क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है जबकि अर्ध्दमध्यम, मध्यम एवं वृहद जोत की संख्या तथा क्षेत्रफल में कमी दर्ज की गयी है। इसका प्रमुख कारण जनसंख्या वृद्धि तथा पारिवारिक उत्तराधिकार के फलस्वरूप भूमिका विभाजन है। जनजातीय बहुल क्षेत्र होने के कारण अनुसूचित जनजाति वर्ग के पास सर्वाधिक जोत तथा क्षेत्रफल पाए गए। यह अध्ययन भूमि प्रबंधन, चकबंदी तथा सतत कृषि विकास हेतु नीति-निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है।

कुंजीशब्द: परिचालित जोत, जोत का आकार, सामाजिक वर्गानुसार जोत, कृषि गणना, भूमि विखंडन।

1. प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ ग्रामीण जनसंख्या का बड़ा भाग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्य पर निर्भर है। कृषि अर्थव्यवस्था की सबसे छोटी किन्तु सबसे महत्वपूर्ण इकाई 'जोत' (Holding) है। जोत से आशय भूमि के उस भाग से है जो कृषि योग्य होता है तथा जिस पर एक व्यक्ति, परिवार अथवा समूह द्वारा कृषि कार्य किया जाता है और जिसका स्वामित्व एक इकाई के रूप में कृषक के पास स्वयं की भूमि, अधिया(वह समझौता, जिसके अंतर्गत भूमि मालिक अपनी जोत पर किसी अन्य कृषक को कृषि कार्य हेतु प्रदान करता है। जिसकी लागत एवं मुनाफा दोनो में आधा-आधा विभजित किया जाता है।),कुट्टू अथवा रेगहा के रूप में हो सकता है। खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) की परिभाषा के अनुसार एक ही प्रबंधन के अंतर्गत कृषि उत्पादन हेतु प्रयुक्त होने वाली वह

Published: 31 July 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i7.45866
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

आर्थिक इकाई जोत कहलाती है जिस पर भूमि का स्वामित्व किसी एक व्यक्ति, समूह अथवा किराये के रूप में हो सकता है।

जोत का आकार तथा उसका वर्गीकरण किसी क्षेत्र की कृषि उत्पादकता, प्रौद्योगिकी अंगीकरण की क्षमता, किसानों की आय तथा जीवन स्तर का महत्वपूर्ण निर्धारक है। सामान्यतः बड़ी जोत में व्यावसायिक तथा यांत्रिकीकृत कृषि की संभावना अधिक होती है जिससे उत्पादन दर में वृद्धि होती है, जबकि छोटी एवं विखंडित जोत में उत्पादन लागत अधिक तथा प्रति इकाई लाभ कम होता है। भारत में स्वतंत्रता के पश्चात जनसंख्या में तीव्र वृद्धि, पारिवारिक उत्तराधिकार कानून तथा भूमि हस्तांतरण की प्रक्रिया के कारण जोत के आकार में निरंतर कमी तथा जोत की संख्या में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गयी है। यह प्रवृत्ति विशेष रूप से जनजातीय एवं पिछड़े क्षेत्रों में अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है, जहाँ भूमि ही आजीविका का मुख्य आधार है।

छत्तीसगढ़ राज्य के बालोद जिले का डौंडी विकासखण्ड जिले का एकमात्र आदिवासी विकासखण्ड है, जहाँ अनुसूचित जनजाति वर्ग की जनसंख्या का बाहुल्य है। जनजातीय समाज में भूमि न केवल आर्थिक संसाधन अपितु सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान से भी जुड़ी होती है। ऐसे क्षेत्रों में जोत की संरचना का भौगोलिक अध्ययन क्षेत्रीय कृषि नियोजन तथा जनजातीय कल्याण नीतियों के निर्माण हेतु अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि गणना 2015-16 तथा 2021-22 के तुलनात्मक आँकड़ों के आधार पर डौंडी विकासखण्ड में परिचालित जोत की संख्या, आकार, वर्गीकरण तथा सामाजिक वर्गानुसार वितरण का कालिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

3. अध्ययन क्षेत्र

डौंडी विकासखण्ड बालोद जिले का एकमात्र आदिवासी विकासखण्ड है। यह जिले के दक्षिण भाग में स्थित है, जिसकी सीमा गुरुर, डौंडी लोहारा एवं बालोद विकासखण्डों से लगी हुई है।

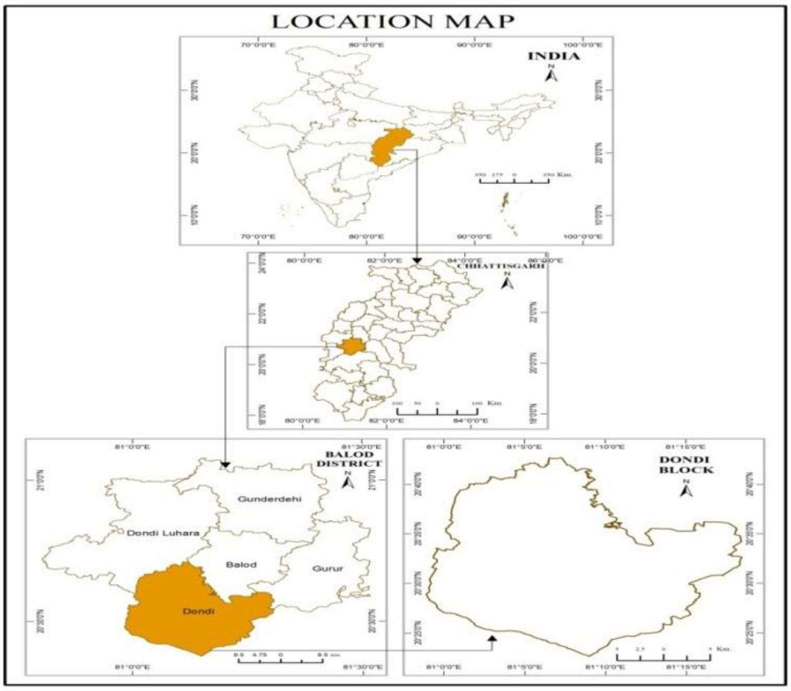

Source: - Survey of India

अध्ययन क्षेत्र का अक्षांशीय विस्तार 20°22'38.87" से 20°42'43.916" उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार 80°58'53.613" से 81°18'25.469" पूर्व है। डौंडी विकासखण्ड का कुल क्षेत्रफल 814.28 वर्ग किमी है, जो क्षेत्रफल की दृष्टि से बालोद जिले में प्रथम स्थान रखता है। वर्ष 2022-23 में यहाँ औसत वार्षिक वर्षा 1496.1 मिमी दर्ज की गयी। यह विकासखण्ड महानदी अपवाह तंत्र के अंतर्गत आता है, जिसके प्रमुख जलाशय खरखरा, गोंदली, रजही तथा बोरिद हैं।

जनगणना 2011 के अनुसार डौंडी विकासखण्ड की कुल जनसंख्या 155370 है, जिसमें पुरुषों की संख्या 76422 तथा महिलाओं की संख्या 78948 है। प्रशासनिक संरचना की दृष्टि से यहाँ 118 आबाद ग्राम, 62 ग्राम पंचायत, 01 जनपद पंचायत, 01 नगर पालिका तथा 02 नगर पंचायत हैं। सामाजिक संरचना की दृष्टि से यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या अनुसूचित जनजाति वर्ग की है, जिसके अंतर्गत 80264 व्यक्ति निवास करते हैं। अनुसूचित जाति की जनसंख्या 13003 है, जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग की संयुक्त जनसंख्या 62103 है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं:

i. डौंडी विकासखण्ड में प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या का आकलन करना।

ii. डौंडी विकासखण्ड में जोतों के औसत आकार की गणना करना।

iii. बालोद जिले एवं डौंडी विकासखण्ड में परिचालित जोत के आकार में 2015-16 तथा 2021-22 के मध्य हुए परिवर्तन का तुलनात्मक विश्लेषण करना।

iv. डौंडी विकासखण्ड में सामाजिक वर्गानुसार परिचालित जोत का अध्ययन प्रस्तुत करना।

5. आँकड़ा स्रोत एवं शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन पूर्णतः द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। मुख्य आँकड़ा स्रोत के रूप में कृषि गणना प्रतिवेदन 2015-16 तथा 2021-22 तथा जनगणना 2011 (दुर्ग/बालोद जिला) के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। प्रति जोत कार्यरत व्यक्तियों की संख्या ज्ञात करने हेतु कृषि कार्य में संलग्न कुल व्यक्तियों (कृषक एवं कृषि मजदूर) की संख्या को परिचालित जोत की कुल संख्या से विभाजित किया गया है। इसी प्रकार जोत के औसत आकार की गणना जोत के कुल क्षेत्रफल को जोत की कुल संख्या से विभाजित कर की गयी है। जोत के आकार के आधार पर वर्गीकरण हेतु मानक श्रेणियों— सीमांत (1 हेक्टेयर तक), लघु (1-2 हेक्टेयर), अर्ध्दमध्यम (2-4 हेक्टेयर), मध्यम (4-10 हेक्टेयर) तथा वृहद (10 हेक्टेयर से अधिक) — का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के प्रस्तुतीकरण हेतु सारणीकरण विधि, % गणना तथा वृत्त-आरेख (Pie Chart) एवं दंड आरेख (Bar Graph) जैसी कार्टोग्राफिक तकनीकों का प्रयोग किया गया है। दोनों वर्षों के आँकड़ों की तुलना कर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

6. विश्लेषण एवं विवेचना

6.1 प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या

प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या डौंडी विकासखण्ड में कृषि कार्य में संलग्न व्यक्तियों (कृषक तथा कृषि मजदूर) की कुल संख्या को परिचालित जोत की कुल संख्या से विभाजित कर ज्ञात की जाती है।

सूत्र - कृषि कार्य में संलग्न लोगों की कुल संख्या

परिचालित जोत की कुल संख्या

वर्ष 2015-16 में डौंडी विकासखण्ड में कृषि कार्य में संलग्न कुल व्यक्तियों की संख्या 30542 तथा परिचालित जोत की कुल संख्या 19323 थी, जिससे प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या 1.58 प्राप्त होती है। वर्ष 2021-22 में कृषि कार्य में संलग्न व्यक्तियों की संख्या समान (30542) रहते हुए जोत की कुल संख्या बढ़कर 24345 हो गयी, जिससे प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या घटकर 1.25 रह गयी,सारणी क्रं.01।

इसी प्रकार बालोद जिले में वर्ष 2015-16 में कृषि कार्य में संलग्न व्यक्तियों की कुल संख्या 189450 तथा जोत की कुल संख्या 170923 थी, जिससे प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या 1.10 प्राप्त होती है। वर्ष 2021-22 में जोत की संख्या बढ़कर 207735 हो जाने से प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या घटकर 0.91 रह गयी। विकासखण्डवार आँकड़ों के अनुसार गुण्डरदेही में कृषक 19140 एवं कृषि मजदूर 29479, डौंडी लोहारा में कृषक 28705 एवं कृषि मजदूर 23445, बालोद में कृषक 10078 एवं कृषि मजदूर 18964, डौंडी में कृषक 11317 एवं कृषि मजदूर 11795 तथा गुरुर में कृषक 12911 एवं कृषि मजदूर 25616 दर्ज किए गए, जिनका योग क्रमशः 82151 (कृषक) एवं 107299 (कृषि मजदूर) है (स्रोतः जनगणना 2011, जिला दुर्ग)।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि दोनों ही स्तरों (विकासखण्ड एवं जिला) पर प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या में कमी आयी है। इसका कारण जोत की कुल संख्या में हुई वृद्धि है, जबकि कृषि कार्य में संलग्न व्यक्तियों की संख्या अपेक्षाकृत स्थिर रही। यह प्रवृत्ति भूमि विखंडन की प्रक्रिया को इंगित करती है, जिसमें परिवारों के विभाजन के साथ-साथ जोत की संख्या तो बढ़ती है परंतु प्रति जोत श्रम शक्ति काअनुपात कम होता जाता है।

6.2 कृषि जोत के आकार का निर्धारण

कृषि जोत के आकार के निर्धारण में क्षेत्र के भौतिक, सामाजिक तथा आर्थिक कारक अपना प्रभाव डालते हैं। कृषि उत्पादन की मात्रा जोत के आकार पर निर्भर करती है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि के साथ परिवार में उत्तराधिकारियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, जिसका सीधे तौर पर जोत के आकार पर प्रभाव पड़ता है, परिणाम स्वरूप फसलों की उत्पादन दर, सीमित फसल उत्पाद, कृषि से प्राप्त आय एवं कृषकों का जीवन स्तर प्रभावित होता है। बड़ी जोत में व्यावसायिक तथा विकसित कृषि की जा सकती तथा उन्नत तकनीकों का प्रयोग कर उत्पादन दर में वृद्धि की जाती है, जिससे कृषकों की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है। परंतु डौंडी विकासखण्ड में जोत के आकार छोटे होते जा रहे हैं।

$$\text{सूत्र - } \frac{\text{जोत का कुल क्षेत्रफल}}{\text{जोत की कुल संख्या}}$$

वर्ष 2015-16 में डौंडी विकासखण्ड में परिचालित जोत का कुल क्षेत्रफल 28091 हेक्टेयर तथा जोत की कुल संख्या 19323 थी, जिससे जोत का औसत आकार 1.45 हेक्टेयर प्राप्त होता है। वर्ष 2021-22 में जोत का कुल क्षेत्रफल बढ़कर 28959 हेक्टेयर तथा जोत की कुल संख्या बढ़ कर 24345 हो गयी, जिससे जोत का औसत आकार घटकर 1.189 हेक्टेयर रह गया। स्पष्ट है कि क्षेत्रफल में मामूली वृद्धि के बावजूद जोत की संख्या में तीव्र वृद्धि के कारण प्रति जोत औसत आकार में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गयी है, सारणी क्रं.01।

6.3 जोत के आकार का तुलनात्मक विश्लेषण (2015-16 एवं 2021-22)

डौंडी विकासखण्ड तथा बालोद जिले में जोत के आकार एवं वर्गीकरण की तुलनात्मक स्थिति निम्न सारणी में प्रस्तुत है:

डौंडी विकासखण्ड एवं बालोद जिला: आकार वर्गानुसार परिचालित जोत की संख्या एवं क्षेत्रफल (हे.) 2015-16 एवं 2021-22 सारणी क्रं. 01

आकार वर्ग	2015-16				2021-22			
	जोत संख्या	%	क्षेत्रफल (हे.)	%	जोत संख्या	%	क्षेत्रफल (हे.)	%
सीमांत (1 हे. तक)	9233	47.78	4761	16.95	13648	56.06	6625.24	22.88
लघु (1-2 हे.)	5752	29.77	8203	29.20	6845	28.12	9690.19	33.46
अर्ध्दमध्यम (2-4 हे.)	3282	16.98	8849	31.50	3100	12.73	8247.06	28.48
मध्यम (4-10 हे.)	993	5.14	5419	19.29	712	2.92	3842.10	13.27
वृहद (10 हे. से अधिक)	63	0.33	860	3.06	40	0.16	554.32	1.91
डौंडी विकासखण्ड (योग)	19323	100	28091	100	24345	100	28958.88	100
बालोद जिला (योग)	170912	-	189109	-	207672	-	193449	-

Source:-Agricultural Census 2015-16 & 2021-22

कृषि जनगणना प्रतिवेदन के अनुसार 2015-16 में डौंडी विकासखण्ड में कुल परिचालित जोत संख्या 19323 थी, जो कि 28091 हेक्टेयर क्षेत्रफल के अंतर्गत आता है। यह डौंडी विकासखण्ड के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 53.49% है। वहीं बालोद जिले में परिचालित जोत की कुल संख्या 170912 थी, जिसके अंतर्गत 189109 हेक्टेयर क्षेत्रफल शामिल था, अर्थात परिचालित जोत के कुल क्षेत्रफल का 14.85% डौंडी विकासखण्ड के अंतर्गत आता है। 2021-22 के कृषि जनगणना प्रतिवेदन के अनुसार डौंडी विकासखण्ड में परिचालित जोतों की कुल संख्या 24345 हो गयी, जो कि 28958.88 हेक्टेयर क्षेत्रफल के अंतर्गत आता है। यह डौंडी विकासखण्ड के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 55.14% है,सारणी क्रं.01 तथा आरेख क्रं.01 एवं 02।

आरेख क्रं. 01

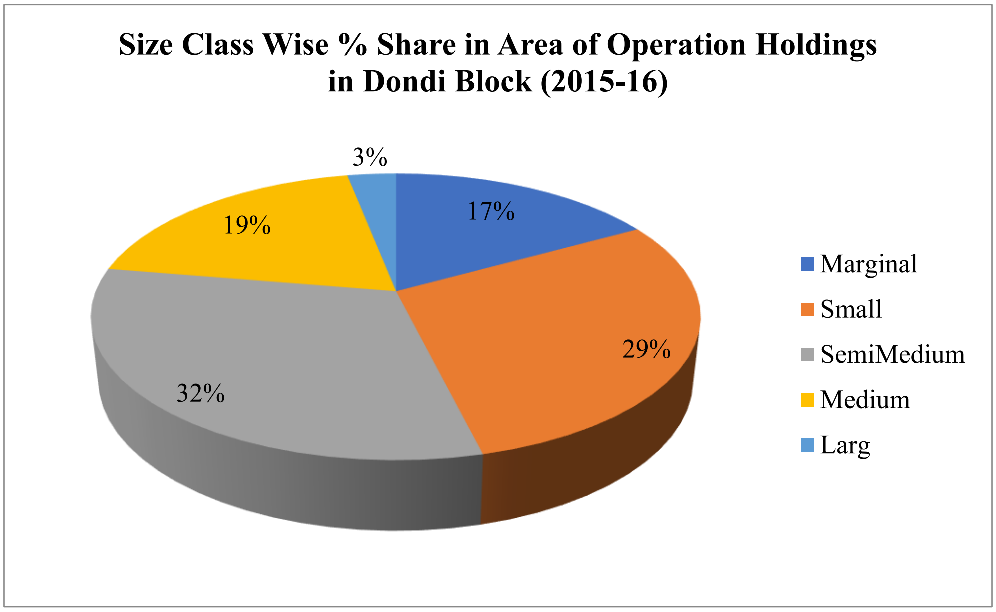

Source:-Agricultural Census 2015-16 & 2021-22

आरेख क्रं. 02

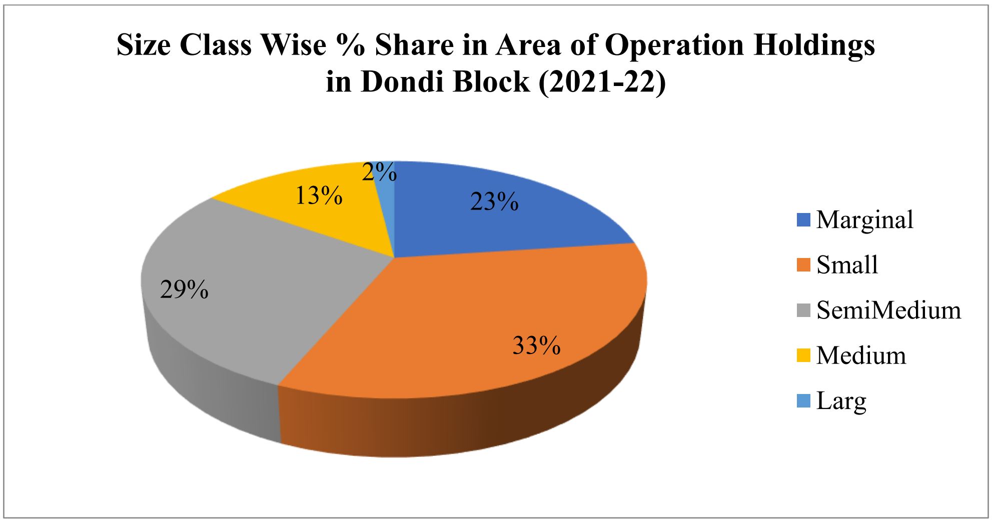

Source:-Agricultural Census 2015-16 & 2021-22

सीमांत जोत- 2015-16 में जोत के वर्गीकरण के आधार पर सर्वाधिक संख्या सीमांत जोत की 9233 थी जो कुल जोत का 47.78% है, परंतु क्षेत्रफल की दृष्टि से सीमांत जोत के अंतर्गत मात्र 16.95% क्षेत्रफल शामिल था। 2021-22 के कृषि जनगणना प्रतिवेदन के अनुसार डौंडी विकासखण्ड में सीमांत जोत की संख्या 13648, इसी वर्ष जोत के वर्गीकरण में भी सर्वाधिक संख्या सीमांत जोत की रही, जो कुल जोत का 56.06% थी। परंतु क्षेत्रफल की दृष्टि से इसके अंतर्गत मात्र 22.88% क्षेत्रफल शामिल था, सारणी क्रं. 01 तथा आरेख क्रं.01 एवं 02।

लघु जोत- 2015-16 में इसके बाद 29.77% के साथ लघु जोत का स्थान था, लघु जोत की कुल संख्या 5752 थी, जिसके अंतर्गत 29.20% क्षेत्रफल शामिल था। 2021-22 में लघु जोतों की कुल संख्या 6845 थी। क्षेत्रफल की दृष्टि से इसके अंतर्गत 28.12% क्षेत्रफल शामिल था, सारणी क्रं. 01 तथा आरेख क्रं.01 एवं 02।

अर्ध्दमध्यम जोत – अर्ध्दमध्यम जोत की कुल संख्या 2015-16 में 3282 थी, जो कुल जोत का 16.98% है, जिसके अंतर्गत सर्वाधिक 31.50% क्षेत्रफल शामिल था। 2021-22 में अर्ध्दमध्यम जोत की कुल संख्या 3100 थी। क्षेत्रफल की दृष्टि से इसके अंतर्गत 12.73% क्षेत्रफल शामिल था, सारणी क्रं.01 तथा आरेख क्रं.01 एवं02।

मध्यम जोत –मध्यम जोत की कुल संख्या 2015-16 में 993 थी, जो कुल जोत का 5.14% थी जिसके अंतर्गत 19.29% क्षेत्रफल आता था। 2021-22 में मध्यम जोत की कुल संख्या 712 थी। क्षेत्रफल की दृष्टि से इसके अंतर्गत 2.92%क्षेत्रफल शामिल था, सारणी क्रं.01 तथा आरेख क्रं.01 एवं 02।

वृहद जोत - 2015-16 में वृहद जोत की संख्या 63 थी, विकासखण्ड में सबसे कम संख्या वृहद जोत की 0.33% थी। 2021-22 में वृहद जोत की संख्या 40 थी। क्षेत्रफल की दृष्टि से इसके अंतर्गत केवल 1.91% क्षेत्रफल शामिल था, सारणी क्रं.01 तथा आरेख क्रं.01 एवं 02।

6.3.1 क्षेत्रफल में आकार-वर्गवार % हिस्सेदारी (वृत्तआरेख विश्लेषण)

मूल आँकड़ों में प्रस्तुत वृत्त-आरेखों (Pie Charts) के अनुसार 2015-16 में डौंडी विकासखण्ड के कुल परिचालित क्षेत्रफल में सीमांत जोत का हिस्सा 17%, लघु जोत का 29%, अर्ध्दमध्यम जोत का 32%, मध्यम जोत का 19% तथा वृहद जोत का मात्र 3% था। वर्ष 2021-22 में यह अनुपात परिवर्तित होकर सीमांत जोत 23%, लघुजोत 33%, अर्ध्दमध्यम जोत 29%, मध्यम जोत 13% तथा वृहद जोत मात्र 2% हो गया। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि सीमांत एवं लघु जोत के अंतर्गत क्षेत्रफल की हिस्सेदारी बढ़ी है जबकि अर्ध्दमध्यम, मध्यम एवं वृहद जोत के अंतर्गत क्षेत्रफल की हिस्सेदारी में कमी आयी है, आरेख क्रं.01 एवं 02।

6.4 डौंडी विकासखण्ड में सामाजिक वर्गानुसार परिचालित जोत

जनगणना 2011 के अनुसार डौंडी विकासखण्ड की कुल जनसंख्या 155370 है, जहाँ विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोग निवास करते हैं। यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या अनुसूचित जनजाति वर्ग की है, जिसके अंतर्गत 80264 व्यक्ति निवास करते हैं। अनुसूचित जाति की जनसंख्या 13003 है, जबकि अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग की जनसंख्या 62103 है। इसी सामाजिक संरचना का प्रभाव जोत के स्वामित्व-प्रारूप में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जैसा कि निम्न सारणी में प्रस्तुत है:

डौंडी विकासखण्ड में सामाजिक वर्गानुसार परिचालित जोत की संख्या एवं क्षेत्रफल (हे.) 2015-16 एवं 2021-22 सारणी क्रं. 02

सामाजिक वर्ग	2015-16				2021-22			
	जोत संख्या	%	क्षेत्रफल (हे.)	%	जोत संख्या	%	क्षेत्रफल (हे.)	%
अनुसूचित जनजाति	14472	74.90	22242	79.18	18651	76.61	23260.82	80.32

E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 7 | July 2026

सामाजिक वर्ग	2015-16				2021-22			
	जोत संख्या	%	क्षेत्रफल (हे.)	%	जोत संख्या	%	क्षेत्रफल (हे.)	%
अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग	3861	19.98	4572	16.27	4819	19.79	4805.01	16.59
अनुसूचित जाति	988	5.11	1277	4.55	870	3.57	888.20	3.07
संस्थागत	2	0.01	1	0.00	5	0.02	4.84	0.02
डौंडी विकासखण्ड (योग)	19323	100	28091	100	24345	100	28958.88	100
बालोद जिला (योग)	170912	-	189109	-	207672	-	193449	-

Source:-Agricultural Census 2015-16 & 2021-22

आरेख क्रं. 03

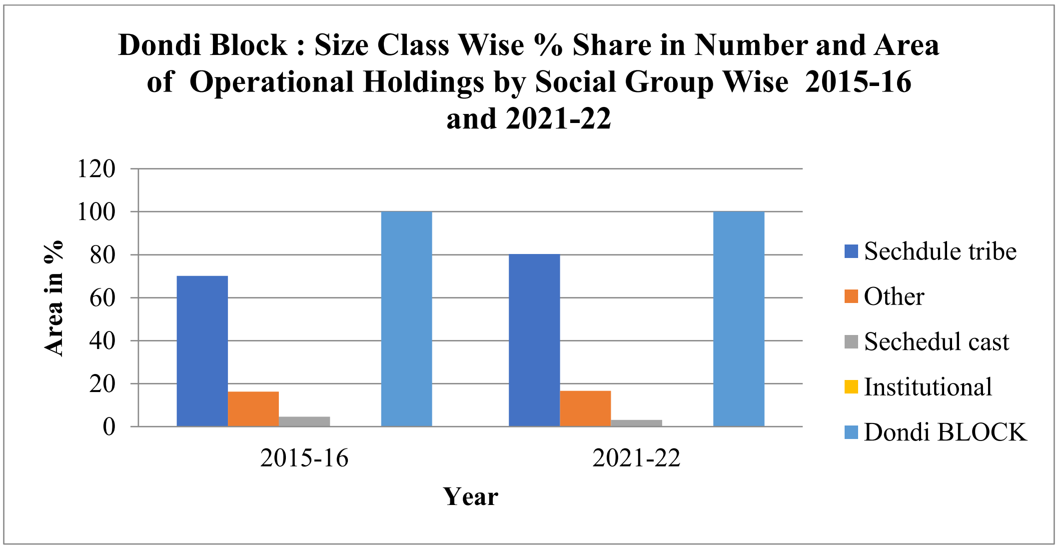

Source:- Agricultural Census 2015-16 & 2021-22

अनुसूचित जनजाति परिवारों में जोत का आकार - 2015-16 में अनुसूचित जनजाति परिवारों में जोत की कुल संख्या 14472 थी, अर्थात विकासखण्ड के परिचालित जोत की कुल संख्या का 74.90% अनुसूचित जनजाति वर्ग के अंतर्गत आता है। इनकी जोत का कुल क्षेत्रफल 22242 हेक्टेयर था, जो कुल परिचालित क्षेत्रफल का 79.18% था। वर्ष 2021-22 में अनुसूचित जनजाति परिवारों में जोत की कुल संख्या बढ़कर 18651 हो गयी, अर्थात विकासखण्ड की कुल जोत का 76.61% अनुसूचित जनजाति वर्ग के अंतर्गत आता है। इनका कुल क्षेत्रफल 23260.82 हेक्टेयर (80.32%) था। सारणी क्रं.02 तथा आरेख क्रं.03।

अनुसूचित जाति परिवारों में जोत का आकार - 2015-16 में अनुसूचित जाति परिवारों में जोत की कुल संख्या 988 थी (5.11%), जिसका कुल क्षेत्रफल 1277 हेक्टेयर (4.55%) था। वर्ष 2021-22 में अनुसूचित जाति वर्ग में जोत की संख्या घटकर 870 (3.57%) तथा क्षेत्रफल 888.20 हेक्टेयर (3.07%) रह गयी, सारणी क्रं.02 तथा आरेख क्रं.03।

अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग **में जोत का आकार -** 2015-16 में अन्य वर्गों में जोत की कुल संख्या 3861 थी (19.98%), जिसका कुल क्षेत्रफल 4572 हेक्टेयर (16.27%) था। वर्ष 2021-22 में अन्य वर्गों में जोत की संख्या 4819 (19.79%) तथा क्षेत्रफल 4805.01 हेक्टेयर (16.59%) दर्ज किया गया, सारणी क्रं.02 तथा आरेख क्रं.03।

उपर्युक्त सारणी क्रं.02 तथा आरेख क्रं. 03 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि दोनों ही वर्षों में सर्वाधिक जोत संख्या एवं क्षेत्रफल अनुसूचित जनजाति वर्ग के अधिकार में है। इसका प्रमुख कारण विकासखण्ड का जनजातीय बहुल होना है। यह छत्तीसगढ़ के आदिवासी विकासखण्डों के अंतर्गत आता है, जहाँ जनगणना 2011 के अनुसार अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या विकासखण्ड की कुल जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात रखती है, जिसके परिणाम स्वरूप यहाँ सबसे अधिक जोत की संख्या अनुसूचित जनजाति वर्ग के पास है। इसके विपरीत संस्थागत जोत की संख्या तथा क्षेत्रफल नगण्य है, जो दर्शाता है कि विकासखण्ड में कृषि भूमि पर मुख्यतः व्यक्तिगत/पारिवारिक स्वामित्व की प्रधानता है।

6.4.1 परिणाम एवं विश्लेषण

विकासखण्ड के सभी वर्गों के जोत के आकार में भिन्नता पाई गई है। 2015-16 में जोत की सर्वाधिक संख्या अनुसूचित जनजाति वर्ग के अंतर्गत 74.90% थी, इसके पश्चात अन्य वर्ग में 19.98%, अनुसूचित जाति वर्ग में 5.11% एवं संस्थागत जोत 0.01% थी। वहीं 2021-22 में जोत की सर्वाधिक संख्या अनुसूचित जनजाति वर्ग के अंतर्गत बढ़कर 76.61% हो गयी, इसके पश्चात अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग में 19.79%, अनुसूचित जाति वर्ग में घटकर 3.57% तथा संस्थागत जोत 0.02% रही।

जोत के आकार के आधार पर देखें तो 2015-16 की अपेक्षा 2021-22 में सीमांत एवं लघु जोत की संख्या तथा क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है, जबकि अर्ध्दमध्यम, मध्यम एवं वृहद जोत की संख्या तथा क्षेत्रफल में कमी आयी है। यह प्रवृत्ति भूमि विखंडन (Land Fragmentation) की सामान्य प्रक्रिया के अनुरूप है, जिसमें जनसंख्या वृद्धि तथा पारिवारिक उत्तराधिकार के कारण बड़ी जोत निरंतर छोटी होती जाती है।

डौंडी विकासखण्ड में जोत की कुल संख्या में 2015-16 की अपेक्षा 2021-22 में 25.98 % तथा जोत के कुल क्षेत्रफलमें 3.1% की वृद्धि हुई है। वहीं बालोद जिले में जोत की कुल संख्या में 21.5% तथा जोत के कुल क्षेत्रफल में 2.3% की वृद्धि हुई है। स्पष्ट है कि जोत की संख्या में वृद्धि की दर, क्षेत्रफल में वृद्धि की दर से कहीं अधिक है, जिसके फलस्वरूप प्रति जोत औसत आकार में लगातार कमी आ रही है — यही भूमि विखंडन की मूल पहचान है।

भौगोलिक दृष्टिकोण से यह प्रवृत्ति क्षेत्र की कृषि सतत्ता (Agricultural Sustainability) के लिए चुनौती पूर्ण मानी जा सकती है, क्योंकि छोटी होती जोत में यंत्रीकरण, सिंचाई अवसंरचना तथा उन्नत तकनीकों का प्रयोग तुलनात्मक रूप से कठिन होता है, जिससे प्रति हेक्टेयर उत्पादन लागत बढ़ जाती है तथा कृषकों की आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है। साथ ही, जनजातीय बहुल क्षेत्र होने के कारण भूमि पर निर्भरता अधिक है, जिससे विखंडन की प्रक्रिया सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से भी संवेदनशील विषय बन जाती है।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डौंडी विकासखण्ड में परिचालित जोत की संरचना में वर्ष 2015-16 से 2021-22 के मध्य उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। जोत की कुल संख्या में वृद्धि हुई है परंतु प्रति जोत औसत आकार 1.45 हेक्टेयर से घटकर 1.189 हेक्टेयर रह गया है। प्रति जोत कार्यरत लोगों की संख्या भी 1.58 से घटकर 1.25 हो गयी है, जो दर्शाता है कि जोत की संख्या में वृद्धि, कृषि कार्य में संलग्न व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि की तुलना में कहीं अधिक तीव्र गति से हुई है।

जोत के वर्गीकरण की दृष्टि से सीमांत एवं लघु जोत की संख्या तथा क्षेत्रफल में निरंतर वृद्धि हो रही है, जबकि अर्ध्दमध्यम, मध्यम एवं वृहद जोत की संख्या तथा क्षेत्रफल में कमी आ रही है। सामाजिक वर्गानुसार विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि विकासखण्ड में जनजातीय बहुलता के कारण अनुसूचित जनजाति वर्ग के पास सर्वाधिक जोत संख्या (76.61%, 2021-22) तथा क्षेत्रफल (80.32%) है।

अध्ययन क्षेत्र में परिचालित जोत की कुल संख्या,सीमांत एवं लघु जोत की संख्या व क्षेत्रफल में वृद्धि का मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि है, जिसके फलस्वरूप परिवार में उत्तराधिकारियों की संख्या में भी वृद्धि हुई है, जिसकारण वर्षानुवर्ष जोत का विभाजन किया जाता है। यह प्रक्रिया दीर्घकाल में कृषि उत्पादकता, किसानों की आय तथा जीवन स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकती है, विशेष रूप से जनजातीय बहुल क्षेत्रों में जहाँ आजीविका का मुख्य आधार कृषि ही है।

8. सुझाव

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं:

i. सीमांत एवं लघु जोत धारियों हेतु सहकारी खेती (Cooperative Farming) तथा भूमि-पूल (Land Pooling) जैसी व्यवस्थाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, जिससे संसाधनों का सामूहिक एवं दक्ष उपयोग संभव हो सके।

ii. छोटी जोतों के लिए उपयुक्त, कम लागत वाले कृषि यंत्रों तथा सूक्ष्म सिंचाई (Micro-irrigation) तकनीकों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए।

iii. जनजातीय क्षेत्र में भूमि अभिलेखों के डिजिटलीकरण तथा भूमि स्वामित्व संबंधी जागरूकता कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि भूमि विवाद तथा अनावश्यक विखंडन को न्यूनतम किया जा सके।

iv. कृषि पर निर्भरता कम करने तथा आय के वैकल्पिक स्रोत विकसित करने हेतु ग्राम स्तर पर कृषि-आधारित लघु उद्योग एवं गैर-कृषि रोजगार के अवसर सृजित किए जाने चाहिए।

v. भविष्य में जोत संरचना की प्रवृत्तियों की सतत निगरानी हेतु ग्राम पंचायत स्तर पर आवधिक भूमि-सर्वेक्षण एवं आँकड़ा संग्रहण प्रणाली सुदृढ़ की जानी चाहिए।

संदर्भ

1. कृषि गणना प्रतिवेदन, 2015-16, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार
2. कृषि गणना प्रतिवेदन, 2021-22, कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग, भारत सरकार
3. भारत की जनगणना, 2011, जिला जनगणना पुस्तिका, दुर्ग/बालोद, छत्तीसगढ़ शासन

4. छत्तीसगढ़ राज्य सांख्यिकी एवं आर्थिक सर्वेक्षण संचालनालय, वार्षिक प्रतिवेदन

5. जिला सांख्यिकी पुस्तिका, बालोद जिला, छत्तीसगढ़ शासन

6. गौतम, डॉ. अलका। (2022)।कृषिभूगोल। इलाहाबाद:शारदा पुस्तक भवन।

7. हुसैन, माजिद। (2017)।भारत का आर्थिक एवं सामाजिक भूगोल। जयपुर:रावत पब्लिकेशन।

8. साहू, पायल। (2017)। दुर्ग जिले की कृषि एवं ग्रामीण विकास पर सिंचाई का प्रभाव : एक स्थानिक कालिक अध्ययन। पीएच.डी. ।शोध प्रबंध, पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)।

9. शर्मा,श्रीमती रंजना।(2000)।बिलासपुर जिले में कृषि एवं पोषण। पीएच.डी. शोध प्रबंध,पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.)।

10. सिंह, जसबीर ।(2018)।कृषिभूगोल।गोरखपुर:वसुंधरा प्रकाशन।

11. तिवारी, आर. सी। (2019)। कृषिभूगोल के सिद्धांत। इलाहाबाद: प्रयागपुस्तकभवन।

12. वर्मा, सृष्टि एवं शर्मा, डॉ. रंजना।(2025)।बालोद जिले के डौंडी विकासखण्ड में भूमि उपयोग प्रतिरुप।शोध ऋतु,अंक 41, वाल्यूम 9, आई एस एन एन-2454-6283